जिले के सभी स्वास्थ्यकर्मी साथियों को डॉक्टर्स डे की हार्दिक शुभकामनाएं

सौजन्य : सीएमएचओ कार्यालय
जिला राजगढ़ मध्यप्रदेश

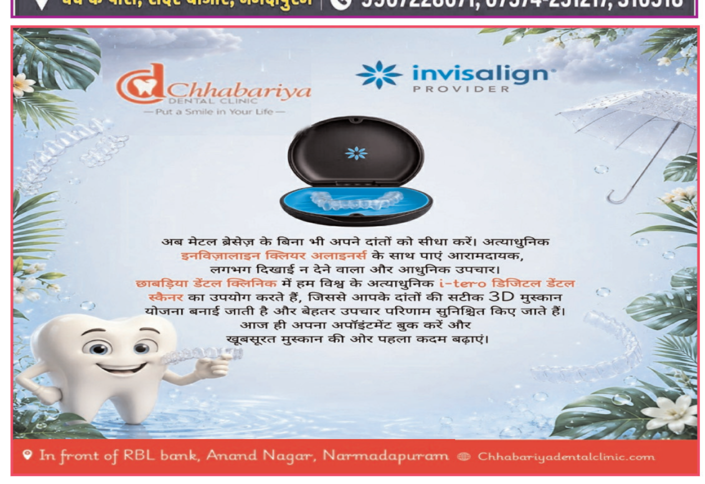

इंग्लैंड की चकाचौंध छोड़ उज्जैन को बनाया कर्मभूमि; 75 की उम्र में भी 12 घंटे की 'नॉन-स्टॉप' सेवा

52 साल से सेवा की मिसाल बनीं डॉ. सतिंदर कौर

37 हजार से अधिक ऑपरेशन कर बचा चुकीं हैं हजारों जिंदगियां

जब क्लिनिक की दीवारें छोटी पड़ गईं, तो गांव की गलियां बनीं अस्पताल

'गरीबों की मसीहा' डॉ. सतिंदर कौर पेड़ की छांव में 'चौपाल' लगाकर आज भी बचा रहीं ग्रामीण महिलाओं की जान

नईदुनिया प्रतिनिधि, उज्जैन : आधुनिक चिकित्सा के दौर में जहाँ इलाज अक्सर 'सॉफ्टवेयर' और 'एसी चैंबर' तक सीमित हो गया है, उज्जैन की डॉ. सतिंदर कौर सलूजा एक ऐसी डॉक्टर हैं जो फाइलों से ज्यादा मरीजों की धड़कनों को पढ़ती हैं। 52 वर्षों का लंबा सफर, राजस्थान से लेकर लंदन तक की शिक्षा और फिर उज्जैन में सेवा का संकल्प—उनकी यह यात्रा किसी प्रेरणादायक कहानी से कम नहीं है। आज 'डॉक्टर्स डे' के अवसर पर हम नमन करते हैं उस शख्सियत को, जिन्होंने चिकित्सा को केवल पेशा नहीं, बल्कि एक 'तपस्या' बना लिया है। डॉ. सलूजा का 'सलूजा नर्सिंग होम' भले ही शहर में हो, लेकिन उनका असली कार्यक्षेत्र अक्सर गांव की पगडंडियाँ होती हैं। वे अक्सर अपनी कार को ही चलता-फिरता क्लीनिक बनाकर गांवों में निकल पड़ती हैं और पेड़ों की छांव में 'चौपाल' लगाती हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मेडिकल की कठिन अंग्रेजी को त्यागकर स्थानीय ग्रामीण भाषा में बात करती हैं, जिससे महिलाएं बिना झिझक अपनी पीड़ा साझा कर पाती हैं। 75 की उम्र में भी ये सफ़र थमा नहीं है। आज भी युवा जैसा जज़्बा उनके हौंसले से नजर आता है। उनके इस जज्बे को देखते हुए ऐसा लगता है, मानों अभी डॉक्टर्स की डिग्री ली हो और मन में ये भाव है कि लोगों की सेवा निस्वार्थ भाव से करना है। उनके कार्य को देखकर ऐसा नहीं लगता है कि उन्होंने सात दशक से अधिक सफर तय कर लिया हो। आज भी उनकी कार्य शैली युवाओं को पीछे छोड़ रही है।

आंकड़े जो कहानी कहते हैं: 37 हजार से अधिक ऑपरेशन

डॉ. सलूजा के समर्पण का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले 52 वर्षों में उन्होंने 37,000 से अधिक सफल ऑपरेशन और 30,000 से अधिक सुरक्षित प्रसव संपन्न कराए हैं। 75 वर्ष की उम्र में भी उनकी सक्रियता युवाओं के लिए मिसाल है। वे रोजाना 12 घंटे मरीजों की सेवा में समर्पित रहती हैं। उनके द्वारा एनीमिया और ब्रेस्ट कैंसर के खिलाफ चलाए गए जागरूकता अभियान ने उज्जैन में स्वास्थ्य के प्रति एक नई चेतना जगाई है।

लॉकडाउन से आज तक: राशन से लेकर दवा तक, सब उनका 'निजी मिशन'

कोविड-19 के दौर में जब हर कोई अपने घरों में सुरक्षित था, डॉ. सलूजा राशन और दवाएं लेकर बस्तियों में घूम रही थीं। यह सिलसिला आज भी जारी है। उन्होंने अपने संसाधनों से बेसहारा बुजुर्गों के लिए एक ऐसा सुरक्षा कवच बनाया है कि अब उन्हें दर-दर नहीं भटकना पड़ता। प्रसूताओं के लिए वे किसी फरिश्ते से कम नहीं हैं, जो न्यूनतम शुल्क तो छोड़िए, कई बार खुद की जेब से खर्च कर इलाज सुनिश्चित करती हैं।

जिजीविषा फाउंडेशन: इंसानियत का नया नाम

डॉ. सलूजा केवल मरीजों के लिए ही नहीं, बल्कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के लिए भी फरिश्ता हैं। 'जिजीविषा फाउंडेशन' के माध्यम से वे कैंसर पीड़ितों और झुग्गी-बस्तियों के बच्चों के लिए भोजन, कपड़े और स्वास्थ्य सहायता का अनूठा कार्य कर रही हैं। वे खुद बस्तियों में जाकर बुजुर्गों को सामग्री देती हैं ताकि उनका स्वाभिमान बना रहे। डॉ. सतिंदर कौर सलूजा जैसे व्यक्तित्व डॉक्टर्स डे की सार्थकता को सिद्ध करते हैं। वे साबित करती हैं कि डॉक्टर का कोट सफेद हो सकता है, लेकिन उसका दिल पूरी तरह 'इंसानियत' के रंग में रंगा होना चाहिए।

सेवा का संकल्प: आर्थिक संबल बनीं डॉक्टर

डॉ. सतिंदर कौर सलूजा आर्थिक रूप से कमजोर प्रसूताओं के लिए किसी देवदूत से कम नहीं हैं। वे केवल चिकित्सा परामर्श ही नहीं देतीं, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव से जूझ रही महिलाओं के लिए एक मजबूत संबल भी हैं। यदि किसी मरीज की स्थिति विकट हो और वह उपचार का खर्च उठाने में असमर्थ हो, तो डॉ. सलूजा बिना किसी हिचकिचाहट के स्वयं आगे आती हैं और आर्थिक बोझ उठाकर उनके इलाज को सुनिश्चित करती हैं।

सरल संवाद का जादू: ग्रामीण महिलाओं से जुड़ाव

चिकित्सा जगत में जहां अक्सर अंग्रेजी के भारी-भरकम शब्दों का बोलबाला रहता है, वहीं डॉ. सलूजा ने ग्रामीण महिलाओं को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए एक अनोखा रास्ता अपनाया है। उन्होंने चिकित्सा विज्ञान की कठिन भाषा को छोड़कर सरल 'लोकभाषा' और स्थानीय बोलियों में संवाद करना शुरू किया। उनकी इसी सहजता का परिणाम है कि अब ग्रामीण महिलाएं झिझक छोड़कर अपनी समस्याओं को खुलकर साझा करती हैं और समय पर सही इलाज पा रही हैं।

सम्मान का सफर: चिकित्सा सेवा को नई पहचान

डॉ. सलूजा का सेवा भाव केवल मरीजों के बीच ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया है। मानव सेवा और चिकित्सा क्षेत्र में उनके पांच दशकों से अधिक के निस्वार्थ योगदान और उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें प्रतिष्ठित 'डॉ. ज्योति प्रसाद गांगुली मेमोरियल अवार्ड' (राष्ट्रीय आईएमए) से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान केवल उनके करियर की उपलब्धि नहीं, बल्कि उज्जैन की उस सेवा-संस्कृति का प्रमाण है जिसे डॉ. सलूजा ने अपने व्यक्तित्व से जीवंत रखा है।

एक नजर: डॉ. सलूजा का सेवा-सफर

- 75की उम्र में चिकित्सा के क्षेत्र में पांच दशक से अधिक का स्वर्णिम काल।
- इंग्लैंड के अस्पतालों में 10 वर्षों तक विशिष्ट सेवाएं।
- गरीब प्रसूताओं का रियायती इलाज और बेसहारा बुजुर्गों को राशन-दवा का निःशुल्क वितरण।